ढूंढ़े जाहेर निसान जाहेरी, सो तो कहे कयामत के दिन।
जो कोई ताबे दज्जाल के, ताए रूह आंख नहीं बातन।। २२ ।।

जाहिर लोग कयामत के निशानों को जाहिरी देखने की इन्तजार में हैं, क्योंकि यह दज्जाल के अधीन हैं। इनकी आत्मदृष्टि नहीं है।

सिपारे चौबीस में, बड़ी साहेबी दज्जाल।
पोहोंचे दरियाव जंगलों, चले याके फिरके नेहेरें मिसाल।। २३ ।।

कुरान के चौबीसवें सिपारे में दज्जाल की बड़ी साहेबी कही है। लिखा है जंगलों से दरिया बहेंगे। इसका अर्थ है कि दज्जाल के मानने वाले ही शून्य दिलों के अधीन नए-नए सम्प्रदाय और धर्म चलाएंगे।

जो लिख्या अव्वल ताले मिने, सोई दुनी से होए।
और बात फुरमाए बिना, क्यों कर करे कोए।। २४ ।।

जब शुरू से ही दुनियां के नसीब में यही लिखा है, तो उसी अनुसार ही दुनियां अब कर रही है और अब खुदा (धनी) के हुकम के बिना दुनियां नया रास्ता नया कार्य कैसे कर सकती है।

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ५४५ ॥

सूरज मगरबका निसान

कह्या मगरब ऊगसी सूरज, दुनियां के दिल पर।
नाहीं रोसनी तिनमें, तब होसी बखत आखिर।। १ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिर के समय सूर्य पच्छिम से उदय होगा और उसमें रोशनी नहीं होगी। वह आखिरत को दुनियां के दिलों पर छा जाएगा।

सूरज ऊग्या मगरब दिलों, कह्या रोसन नाहीं तित।
तो अक्स सूरज की अंधेरी, सो गया ईमान रही जुलमत।। २ ।।

पच्छिम की दिशा को मुंह करके पूजा करने वाले मुसलमानों के दिलों पर जो ज्ञान था, वह हट गया। अब वहां अंधेरा हो गया। उनके दिलों पर जो ज्ञान का सूर्य था, वह ईमान चले जाने से अन्धकार में बदल गया।

रोसन बिना सूरज कह्या, ऊग्या दिलों पर जे।
सो आई पुकार मगरब से, देखो निसान जाहेर हुए ए।। ३ ।।

इसलिए मक्का के मानने वाले मुसलमानों के दिलों पर बिना रोशनी का सूरज कहा है। अब देखो मक्का से लिखकर भी आ गया है कि कयामत का यह निशान जाहिर हो गया है।

ए कह्या रसूलें इसारतों, ऐसा होसी बखत आखिर।
मता ले जासी जबराईल, तब रेहेसी अंधेर दिलों पर।। ४ ।।

रसूल साहब ने पहले ही इशारतों में कहा था कि आखिर के समय ऐसा हो जाएगा कि जबराईल फरिश्ता आखिर के समय में मक्का से सब न्यामतें उठाकर हिन्द में जहां इमाम मेंहेंदी साहब आएंगे, उनके पास ले जाएंगे। तब मक्कावासियों के दिलों पर अज्ञानता का अंधेरा छा जाएगा।

Nijanand App

कह्या सूरज होसी मगरब का, तिनमें नहीं रोसन।
होसी गुलबा जोर दज्जालका, तब ईमान न रेहेसी किन।।५।।

इसलिए लिखा है कि सूर्य पच्छिम में होगा। मुसलमानों के वास्ते बिना रोशनी का होगा, इसीलिए ईमान न रहने से मक्का में दज्जाल का जोर बढ़ा और कोई भी ईमान पर खड़ा नहीं रह सका।

जाहेरी देखें सूरज जाहेर, अजूं मगरब ऊग्या नाहें।
देखें न माएना अंदर, कह्या रोसन नहीं तिन माहें।।६।।

जाहिरी लोग जाहिर में देख रहे हैं कि सूर्य अभी पच्छिम से नहीं उगा। वह अन्दर का अर्थ नहीं लेते जिसमें कहा गया है कि उसमें रोशनी नहीं होगी।

तब सूरज पना क्या रह्या, कही बिन रोसन अंधेर।
सो गया ईमान रह्या कुफर, तिन लई जो दुनियां घेर।।७।।

जिसमें रोशनी न हो वह सूर्य कैसा? मक्का से ईमान उठ गया, कुफ्र रह गया, जो चारों तरफ फैल गया।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ५५२ ॥

आजूज माजूजका निसान

कहे आजूज माजूज, जाहेर होसी आखिर।
खाए जासी सब सय को, ऐसा होसी बखत फजर।।१।।

कुरान में लिखा है कि आजूज-माजूज आखिर के वक्त जाहिर होंगे। वह सारी दुनियां को खा जाएंगे। फजर के वक्त ऐसी हालत हो जाएगी।

दिवाल कही अष्टधात की, चाटें आजूज माजूज दायम।
पीछे रहे जैसी कागद, सुबा देखें त्योंहीं कायम।।२।।

यह आजूज-माजूज रोज ही अष्टधातु की दीवार को चाटते हैं। अष्टधातु की दीवार मनुष्य तन है और आजूज-माजूज दिन-रात हैं और इसे खा रहे हैं। सायं के समय शरीर थककर कागज के समान हो जाता है और प्रातः फिर तह मोटी हो जाती है।

आजूज माजूज जुफ्त, गिनती लाख चार।
सब पी जासी दुनी पानी ज्यों, टूटे दिवाल न रहे लगार।।३।।

आजूज-माजूज के जोड़ों की गिनती चार लाख की बताई है। यह दुनियां को पानी के समान पी जाएंगी और दीवार टूट जाएगी। फिर कुछ नहीं बचेगा।

तीन फौजां तिन होएसी, तूला ताबा साबा की।
दुनी जिमी सब खाए के, तीर आसमान चलावसी।।४।।

प्रातः, दोपहर और शाम इनकी तीन फौजें होंगी। यह सब जमीन पर रहने वालों को खाकर फिर आसमान की ओर देखेंगे।

Nijanand App